अध्याय 4

पापबलि

लैव्यव्यवस्था में यहोवा द्वारा दी गई चौथे प्रकार का चढ़ावा "पापबलि" है, जिसके बारे में पहली बार इस पुस्तक में 4:3 में बताया गया है। "पापबलि" इब्रानी शब्द חַטָּאת *(चट्टाअथ)*[1] का सामान्य रूप से स्वीकार किया गया अनुवाद है, जबकि टिप्पणीकार अक्सर इसे "शुद्धिकरण बलि" कहते हैं।[2] अनुवाद "शुद्धिकरण बलि" कुछ लोगों द्वारा पसंद किया जाता है क्योंकि इब्रानी शब्द न केवल नैतिक पापों (भूलचूक या कर्मों के पाप) के सम्बन्ध में, परन्तु यह धार्मिक अशुद्धता के संदर्भ में भी लैव्यव्यवस्था में प्रयोग किया गया था। उदाहरण के लिये, 12:6-8 में, "पापबलि" के अनुसार बच्चे के जन्म से जुड़े "अशुद्धता" को दूर करने के लिये कहा गया है। "शुद्धिकरण" एक ऐसा शब्द है जिसे नैतिक पाप को हटाने और धार्मिक अशुद्धता से शुद्धिकरण करने दोनों के लिये लागू किया जा सकता है।[3]

4:1 में सूत्रीय खण्ड के साथ विषय का परिचय दिया गया है "फिर यहोवा ने मूसा से कहा, यह कह ... ।" यहोवा के होमबलि, अन्नबलि और मेलबलि के नियम दिए जाने से पहले, 1:1 में इसी तरह के शब्दों का प्रयोग किया गया था। दोषबलि से सम्बन्धित निर्देशों से पहले, 4:1 में प्रयुक्त शब्दों का प्रयोग 5:14 में फिर से किया गया है। 4:1 में इस सूत्र के उपयोग से पता चलता है कि एक नए विषय का परिचय दिया जा रहा है।[4] निष्कर्ष यह है कि स्वेच्छा बलि (होम, अन्न और मेल) की चर्चा 1:1-3:17 में की गई है जो पाप (4:1-5:13) और दोष (5:14-6:7) के लिये आवश्यक बलियों से किसी प्रकार से भिन्न है। एक इस्राएली, जो पापों के लिये दोषी था जिसके लिये पापबलि और दोषबलि ठहराई गई थीं यदि वह उन बलिदानों को चढ़ाने में विफल रहता था तो वह दण्ड के योग्य ठहरता था।

पाप, बलिदान और प्रायश्चित्त

तथ्य यह है कि व्यवस्था में दो अलग-अलग प्रकार के बलिदान शामिल हैं जो पापों को दूर करने के लिये बनाए गए हैं (पापबलि और दोषबलि) जो भ्रमित करते हैं। इसके अलावा, "प्रायश्चित्त" जिसकी प्रतिज्ञा एक अन्य बलिदान (होमबलि) के माध्यम से किया गया था, और अभी भी एक अन्य प्रकार का बलिदान (मेलबलि) परमेश्वर के साथ शान्ति को बढ़ावा देने के लिये कहा गया था। ये बलिदान आपस में और पापों की क्षमा के लिये एक दूसरे के साथ कैसे जुड़े हैं?

इस प्रश्न का उत्तर अलग-अलग तरीकों से दिया गया है। निम्नलिखित कथन

इसे समझने का एक प्रस्तावित तरीका है कि कैसे क्षमा के लिये बलिदान चढ़ानेवाले की इच्छा विभिन्न बलिदानों से जुड़े हुए हैं:

मेलबलि: परमेश्वर से एक अनुरोध कि बलिदान चढ़ानेवाले पर अनुग्रह करे।[5]
होमबलि: सामान्य रूप में क्षमा के लिये अनुरोध।[6]
पापबलि: एक विशेष पाप की क्षमा के लिये याचना।
दोषबलि: एक विशेष प्रकार की पाप की क्षमा के लिये याचना।

इन विभिन्न बलिदानों और प्रार्थना के प्रकार जो प्रार्थना मसीही आज करते हैं के बीच समानता बताई जा सकती है। हम परमेश्वर से माँगते हैं कि स्वर्ग से नीचे की ओर दृष्टि करके हमें आशीष दे की समानता एक इस्राएली जो मेलबलि में पूरा करना चाहता था से की जा सकती है। हम बहुत सामान्य शब्दों में पापों की क्षमा माँगते हैं। जब हम कहते हैं, "पिता, हमारे पापों को क्षमा कर," जो कि इस्राएली के अनुरोध के समान है, जब वह होमबलि चढ़ाता था। कभी-कभी हम यह मानते हैं कि हम विशिष्ट पापों के लिये दोषी हैं; और हम उसे समझते हैं, यदि हम क्षमा चाहते हैं, तो हमें उन पापों का अंगीकार करना चाहिए और उनके लिये बदला चूकाना चाहिए। ऐसा करने से यह मेलबलि या दोषबलि के बलिदान के बराबर होती है।

लैव्यव्यवस्था 4 इन भेदों को स्पष्ट नहीं करता है बल्कि, अध्याय में पापी के चार वर्गों को परिभाषित किया गया है और यह वर्णन करता है कि क्षमा करने के लिये उन्हें क्या करना होगा।

पापबलि से सम्बन्धित व्यवस्था का स्रोत (4:1, 2)

[1]फिर यहोवा ने मूसा से कहा, [2]"इस्राएलियों से यह कह कि यदि कोई मनुष्य उन कामों में से जिनको यहोवा ने मना किया है, किसी काम को भूल से करके पापी हो जाए।"

ये दो आयत पापबलि के विषय में परमेश्वर की व्यवस्था का परिचय देते हैं।

आयतें 1, 2. अपने लोगों से जिस बलिदान की वह अपेक्षा करता था उसके बारे में परमेश्वर के निरन्तर प्रकाशन की शुरुवात पहले ही शब्दों के साथ हो चुकी है जिसका सामना बाइबल पाठक पहले ही कर चुका है: **तब यहोवा ने मूसा से कहा, यह कह ...** (देखें निर्गमन 13:1; 25:1; 40:1)। इसी परिचय का उपयोग पूरे लैव्यव्यवस्था और गिनती में किया गया है। ये शब्द पाठक को बताते हैं कि "यहोवा" व्यवस्था का लेखक था और "मूसा" उसका बोलनेवाला था।

परमेश्वर ने पापों की दो विशेषताओं का वर्णन किया, जिसका उपाय ये बलिदान थे। *पहले, वे भूल से किए गए पाप थे।* यहोवा ने कहा, "**यदि कोई मनुष्य किसी काम को भूल से करके पापी हो जाए ...**।" अधिकांश अंग्रेज़ी के संस्करणों में "भूल से करके" अनुवाद पाया गया है अन्य अनुवादों में "अनदेखी करके" (KJV),

"अज्ञानता वश" (REB; NAB; NJB) और "आकस्मिक" (NCV) पाया गया है। भूल से किया गया पाप, अज्ञानता वश या निर्बलता का पाप था; यह प्रतिबद्ध होकर या योजना बनाकर किए गए पाप के समान नहीं था, बिना पहले से सोचे-विचारे किया जाने वाला पाप था। क्लाइड एम. वुड्स के अनुसार "भूल से विश्वासघात" (RSV), को "गलती से" माना जा सकता है; ऐसे अपराधों में "न केवल अनदेखे किए पाप शामिल हैं, बल्कि लापरवाही, चूक या अन्य मानवीय निर्बलताओं के पापों को भी शामिल किया गया है।" उन्होंने यह भी बताया कि "गिनती 15:27-31 में यह श्रेणी 'ढिठाई से' पाप करने अर्थात् खोलकर आज्ञा का उल्लंघन करने और परमेश्वर के विरूद्ध बलवा करने के विपरीत माना गया है।"[7] रॉय गेन ने अनजाने में किए पाप के विषय में कहा, "उल्लंघन आकस्मिक हो सकता है या कोई व्यक्ति जान सकता है कि वह जानबूझकर गतिविधि के सापेक्ष कर रहा है, परन्तु उसे पता नहीं होता है कि यह गलत है।"[8] उसने यह भी कहा कि, पापबलि, विशेष पापों के लिये ठहराई गई थी, "भूल से विश्वासघात करे और पापी ठहरे, किसी काम को भूल से करके पापी हो जाए और सम्भवतः उस समय मालूम न होने पर पापी हो जाए (लैव्य. 4:2; 5:15)।"[9]

जिन पापों को पूर्वविचार की आवश्यकता होती है (जैसे झूठ बोलना और चोरी करना) वे अभी भी "अज्ञानता वश" या "गलती से" किए गए पापों के विषय के तहत आ सकते हैं और उन्हें क्षमा किया जा सकता है।[10] ऐसे पापों और जिनके लिये कोई बलिदान नहीं चढ़ाया जाता था के बीच अन्तर सम्भवतः पापी का स्वभाव था। जो चोरी करने के बारे में सोचता था और फिर चोरी करता था वह शायद निर्बल हो सकता था, परन्तु जो परमेश्वर की इच्छा को जानता था और ढिठाई से कहता था कि, सचमुच में, "परमेश्वर क्या कहता है मुझे उन बातों का परवाह नहीं है; मैं जो करना चाहता हूँ मैं वही करूँगा," यह जानबूझकर किया गया पाप था।

गिनती 15:27-31 के अनुसार, यदि किसी ने जानबूझकर पाप किया है, "भूल से" या "ढिठाई से" (RSV), उसके लिये कोई पापबलि नहीं दी गई थी। जानबूझकर पाप को अपनाने से किसी भी प्रकार का बलिदान पर्याप्त नहीं होगा बल्कि, उसे "उसके लोगों के बीच में से नष्ट" किया जाएगा। परमेश्वर के विरुद्ध खुले विद्रोह से किए गए पापों के लिये कोई भी बलिदान नहीं किया जा सकता।[11] यह अनुच्छेद पश्चाताप के प्रश्न को सम्बोधित नहीं करता है।

दूसरा, उन पापों के लिये जो परमेश्वर की व्यवस्था को तोड़ने पर उसका उपाय पापबलि से किया जा सकता था। जो पाप करता है, वह उन कामों को करता है जिनको करने के लिये **यहोवा ने मना किया है।** मूल शब्द जिसका अनुवाद "पाप" (חָטָא, *चाटा)* है, उसका वास्तविक अर्थ है "निशाने से चूक जाना।"[12] किसका निशाना? परमेश्वर का! अध्याय में दिए परिचय से स्पष्ट रूप से यह दावा किया जा सकता है कि जो पाप करता था, वह परमेश्वर की व्यवस्था को बनाए रखने में विफल रहने के कारण "निशाने" से चूक जाता था।

अभिषिक्त याजक के लिए पापबलि: बछड़ा (4:3-12)

3"और यदि अभिषिक्त याजक ऐसा पाप करे जिससे प्रजा दोषी ठहरे, तो अपने पाप के कारण वह एक निर्दोष बछड़ा यहोवा को पापबलि करके चढ़ाए। 4वह उस बछड़े को मिलापवाले तम्बू के द्वार पर यहोवा के आगे ले जाकर उसके सिर पर हाथ रखे, और उस बछड़े को यहोवा के सामने बलि करे। 5और अभिषिक्त याजक बछड़े के लहू में से कुछ लेकर मिलापवाले तम्बू में ले जाए; 6और याजक अपनी उंगली लहू में डुबो-डुबोकर और उसमें से कुछ लेकर पवित्रस्थान के बीचवाले परदे के आगे यहोवा के सामने सात बार छिड़के। 7और याजक उस लहू में से कुछ और लेकर सुगन्धित धूप की वेदी के सींगों पर जो मिलापवाले तम्बू में है यहोवा के सामने लगाए; फिर बछड़े के सब लहू को वेदी के पाए पर जो मिलापवाले तम्बू के द्वार पर है उंडेल दे। 8फिर वह पापबलि के बछड़े की सब चरबी को उससे अलग करे, अर्थात् जिस चरबी से अंतड़ियाँ ढपी रहती हैं, और जितनी चरबी उनमें लिपटी रहती है, 9और दोनों गुर्दे और उनके ऊपर की चरबी जो कमर के पास रहती है, और गुर्दों समेत कलेजे के ऊपर की झिल्ली, इन सभों को वह ऐसे अलग करे, 10जैसे मेलबलिवाले चढ़ावे के बछड़े से अलग किए जाते हैं, और याजक इनको होमबलि की वेदी पर जलाए। 11परन्तु उस बछड़े की खाल, पाँव, सिर, अंतड़ियाँ, गोबर, 12और सारा मांस, अर्थात् समूचा बछड़ा छावनी से बाहर शुद्ध स्थान में, जहाँ राख डाली जाएगी, ले जाकर लकड़ी पर रखकर आग से जलाए; जहाँ राख डाली जाती है वह वहीं जलाया जाए।"

इस अनुच्छेद का शीर्षक का परिचय देने के पश्चात्, यहोवा ने मूसा को चार प्रकार के पापियों के बारे में बताया, जिनको पाप करने के पश्चात् पापों की क्षमा प्राप्त करने के लिए निर्देशों की आवश्यकता थी।

आयत 3. प्रथम वर्ग के पापी जिनको यहाँ संबोधित किया गया है वह **अभिषिक्त याजक** या महायाजक था। उसका वह पाप जो **प्रजा को दोषी** ठहराता हो उस पाप के लिए उसको **पापबलि** चढ़ाना था। महायाजक के कार्य अति महत्वपूर्ण थे। यदि उसने अपना कार्य परमेश्वर के निर्देशानुसार किया तो उसका लाभ पूरी जाति को मिलता थाः सभी लोग आशीष प्राप्त करते थे और सबके पाप क्षमा किये जाते थे। लेकिन, दूसरी ओर यदि उसने पाप किया तो उसके द्वारा वह पाप और उसका दण्ड पूरी जाति पर लाते थे।

अपने पाप के लिए अभिषिक्त याजक को एक **बछड़ा** - सबसे बड़ा व सबसे महंगा बलि देना था। यह एक **निर्दोष** बछड़ा होना चाहिए था।

आयतें 4-10. बछड़ा बलि करने की अधिकांश प्रक्रिया होमबलि जैसा ही था।[13] सर्वप्रथम, बलि चढ़ाने वाले याजक को यह निर्देश दिया गया था कि वह जानवर को **मिलापवाले तम्बू** अर्थात् निवास स्थान के द्वार पर लाए। दूसरी बात, तब उसको **अपना हाथ उसके सिर पर रखना था**। तीसरी बात, तब उसे **बछड़े बलि करना था** (4:4)। चौथी बात, उसको जानवर के लहू का प्रयोग पश्चाताप

करने के लिए विस्तृत रीति रिवाज़ के अनुसार प्रयोग करना था। उसको **अपनी उंगली लहू में डुबो-डुबोकर और उसमें से कुछ लेकर पवित्रस्थान के बीचवाले परदे के आगे**, अर्थात् निवास स्थान के पवित्र स्थान के परिसीमन में, **यहोवा के सामने सात बार छिड़कना था** (4:5, 6)। इसके साथ ही उसको **लहू में से कुछ और लेकर सुगन्धित धूप की वेदी के सींगों पर जो मिलापवाले तम्बू में है यहोवा के सामने लगाना** था (4:7)। उसके पश्चात् उसे बचे हुए लहू को **वेदी के पाए पर जो मिलापवाले तम्बू के द्वार पर है उंडेलना** था (4:7)। पाँचवीं बात, "मेल बलि के समान" (देखें 3:14-16), परंतु होमबलि के बलिदान जैसा नहीं, याजक को केवल जानवर के चरबी को ही **होमबलि के वेदी पर चढ़ाना था** (4:8-10)।

आयतें 11, 12. इस श्रेणी में छटी प्रक्रिया जो इससे पहले लैव्यव्यवस्था की पुस्तक में नहीं बताया गया है वह इस प्रकार भिन्न है। बलि की गई पशु की चरबी को वेदी पर जलाया जाना चाहिए था, लेकिन बलि की गई जानवर की **खाल, पाँव, सिर, अंतड़ियाँ, गोबर, और सारा मांस, अर्थात् समूचा बछड़ा छावनी से बाहर शुद्ध स्थान में, जहाँ राख डाली जाएगी, ले जाकर लकड़ी पर रखकर आग से जलाया** जाना चाहिए था। जिस स्थान पर बछड़े के अवशेष जलाया जाना था उस स्थान को **जहाँ राख डाली जाती थी**, कहा गया है।

इस संस्कार के संभावित महत्वत्ता के अलावा, बलि की गई जानवर का अवशेष जलाना यह सुनिश्चित करता था कि याजक बलि का मांस खाकर जो उसके पाप के लिए बलिदान गया था, अपने अनुचित कार्य के द्वारा लाभांवित न हो। उनको दूसरे के पापबलि का मांस खाने की अनुमति थी (6:24-30; 10:17), लेकिन उनको इस पापबलि के मांस का कुछ भी भाग खाने की अनुमति नहीं था।

प्रतीकात्मक रूप से याजक के पाप के लिए चढ़ाए गए पापबलि की प्रक्रिया यह सुझाव देती है कि जब वह अपना हाथ जानवर के सिर पर रखता है तो इसके द्वारा वह अपनी पहचान उस जानवर से करता है और इस प्रकार वह अपने पाप को पशु पर स्थानांतरण करता है। जब पशु मारा जाता है तो जो मृत्युदण्ड इस पापी को मिलना चाहिए था, उसके स्थान पर इस बछड़े की मृत्यु हुई।[14] वेदी और उसके निकट लहू छिड़का जाना परमेश्वर से यह विनती दर्शाता है कि पशु के इस बलिदान को वह याजक के पाप प्रायश्चित्त के लिए स्वीकार करे। पशु के अवशेष को छावनी के बाहर जलाने का आशय यह दर्शाता है कि जिस पाप का प्रायश्चित्त पशु के लहू (या उसकी मृत्यु) के द्वारा किया गया है, वह उसे छावनी से हटा दिया गया है और उसे पूर्णतया मिटा दिया गया है, इसलिए अब सभा को अभिषिक्त याजक के पाप का परिणाम नहीं भुगतना पड़ेगा।[15]

मण्डली के लिए पापबलि: एक बछड़ा (4:13-21)

[13]"यदि इस्राएल की सारी मण्डली अज्ञानता के कारण पाप करे और वह बात मण्डली की आँखों से छिपी हो, और वे यहोवा की किसी आज्ञा के विरुद्ध कुछ करके दोषी ठहरे हों; [14]तो जब उनका किया हुआ पाप प्रगट हो जाए तब मण्डली एक

बछड़े को पापबलि करके चढ़ाए। वह उसे मिलापवाले तम्बू के आगे ले जाए, 15और मण्डली के वृद्ध लोग अपने अपने हाथों को यहोवा के आगे बछड़े के सिर पर रखें, और वह बछड़ा यहोवा के सामने बलि किया जाए। 16तब अभिषिक्त याजक बछड़े के लहू में से कुछ मिलापवाले तम्बू में ले जाए; 17और याजक अपनी उंगली लहू में डुबो-डुबोकर उसे बीचवाले परदे के आगे सात बार यहोवा के सामने छिड़के। 18और उसी लहू में से वेदी के सींगों पर जो यहोवा के आगे मिलापवाले तम्बू में है लगाए; और बचा हुआ सब लहू होमबलि की वेदी के पाए पर जो मिलापवाले तम्बू के द्वार पर है उंडेल दे। 19और वह बछड़े की कुल चरबी निकालकर वेदी पर जलाए। 20जैसे पापबलि के बछड़े से किया था वैसे ही इस से भी करे; इस भाँति याजक इस्राएलियों के लिये प्रायश्चित्त करे, तब उनका वह पाप क्षमा किया जाएगा। 21और वह बछड़े को छावनी से बाहर ले जाकर उसी भाँति जलाए जैसे पहले बछड़े को जलाया था; यह मण्डली के निमित्त पापबलि ठहरेगा।"

इस अध्याय में दूसरे किस्म के पापीः "पूरी मण्डली," का वर्णन एक समूह के रूप में किया गया है।

आयतें 13-21. जिस पाप के लिए बलिदान किया जाना चाहिए उसमें (1) **इस्राएल की पूरी मण्डली** सम्मिलित हो (2) उस मण्डली को सम्मिलित करो जिन्होंने परमेश्वर द्वारा मना किए गए कार्य करके उसकी व्यवस्था का उल्लंघन किया (3) उस पाप को सम्मिलित करो जो मण्डली की आँखों में धूल झोंककर किया गया। बलि तब की जानी चाहिए थी जब मण्डली का पाप प्रकट हो जाता था। पाप कितना प्रकट हो इसके बारे में कुछ भी नहीं कहा गया है; संभवतः पाठक इस बात का अनुमान लगा लेता था कि परमेश्वर उनके पापों को बताने के लिए किसी भविष्यवक्ता को भेजता था।

एक बार जब पाप प्रकट हो जाता था, तो मण्डली को बलि चढ़ाने की उसी विधि का पालन करना चाहिए जो अभिषिक्त याजक के पाप मिटाने के लिए प्रयोग की जाती थी। मिलापवाले तम्बू में **एक बछड़ा** लाया जाना चाहिए (4:14)। मण्डली के वृद्ध लोग **उसके सिर पर अपना हाथ रखें** और उसके बाद उसको मारना चाहिए था (4:15)। उसके **लहू** को पवित्र स्थान में **बीच वाले परदे** के पास छिड़कना था (4:16, 17), सुगन्धद्रव्यों की **वेदी के सिंगों पर** लगाना था और **बचा हुआ सब** लहू **होमबलि की वेदी के पाए पर जो मिलापवाले तम्बू के द्वार पर है उंडेल देना** था (4:18)। इसकी चरबी को वेदी पर जलाया जाना चाहिए था (4:19); और इसके अवशेष को **छावनी के बाहर** जलाया जाना चाहिए था (4:20, 21)।[16]

यह पापबलि इस तथ्य का विश्लेषण करता है कि परमेश्वर पाप का लेखा सम्पूर्ण इस्राएल से लेता है। यद्यपि, पुराने नियम में व्यक्ति विशेष महत्वपूर्ण थे; परंतु प्राथमिक रूप से इस्राएल के साथ परमेश्वर की वाचा एक राष्ट्र के साथ बाँधी गई वाचा थी। यदि एक राष्ट्र सम्पूर्ण रूप से परमेश्वर की आज्ञा मानता था तब परमेश्वर लोगों को आशीष देता था; लेकिन यदि राष्ट्र परमेश्वर की आज्ञा उल्लंघन

करता था, तब परमेश्वर उनको श्राप देता था। कभी-कभी सम्पूर्ण राष्ट्र का चित्रण, आज्ञा न मानने वाला और दुष्ट किया गया था, यद्यपि उस राष्ट्र में कोई भी व्यक्ति धर्मी हो सकता था। पूरी मण्डली के लिए पापबलि की अर्हता यह सीख देती है कि मण्डली में हर एक व्यक्ति को, यहाँ तक कि एक धर्मी व्यक्ति को भी पापी मण्डली की खातिर पापबलि में सम्मिलित होना पड़ता है।

प्रधान पुरुष के लिए पापबलिः बकरा (4:22-26)

22"जब कोई प्रधान पुरुष पाप करके, अर्थात् अपने परमेश्वर यहोवा की किसी आज्ञा के विरुद्ध भूल से कुछ करके दोषी हो जाए, 23और उसका पाप उस पर प्रगट हो जाए, तो वह एक निर्दोष बकरा बलिदान करने के लिये ले आए; 24और बकरे के सिर पर अपना हाथ धरे, और बकरे को उस स्थान पर बलि करे जहाँ होमबलि पशु यहोवा के आगे बलि किये जाते हैं; यह पापबलि ठहरेगा। 25तब याजक अपनी उंगली से पापबलि पशु के लहू में से कुछ लेकर होमबलि की वेदी के सींगों पर लगाए, और उसका लहू होमबलि की वेदी के पाए पर उंडेल दे। 26और वह उसकी कुल चरबी को मेलबलि की चरबी के समान वेदी पर जलाए; और याजक उसके पाप के विषय में प्रायश्चित्त करे, तब वह क्षमा किया जाएगा।"

पापियों की अगली श्रेणी जिनको पापबलि चढ़ाने की आवश्यकता है वह मण्डली के प्रधान पुरूषों की है।

आयतें 22, 23. लोगों के **प्रधान** पुरुष को जिसके लिए पापों की क्षमा की आवश्यकता थी वह परमेश्वर की व्यवस्था का उल्लंघन था, जिसके बारे में वह पहले अनभिज्ञ रहा हो। जब उसको ज्ञात हो जाता था कि उसने पाप किया है - और जब उस पर **उसका पाप प्रगट किया जाता** है - तब प्रधान पुरुष पापबलि के रूप में एक **बकरा** ले आए। बछड़े की तुलना में बकरा सस्ता पशु था, जो यह सुझाव प्रस्तुत करता है कि बलिदान के आदेश का पाप के प्रभाव से सहसंबंध था। व्यक्ति (या मण्डली) जितना प्रभावशाली होता था, उसके (उनके) पाप भी उतना ही अधिक प्रभाव डालता था - और, इसलिए, पाप क्षमा के लिए उतना ही बड़ा बलिदान की आवश्यकता होती थी।[17]

आयतें 24-26. प्रधान पुरुष को पाप क्षमा के लिए जिस संस्कार का अनुकरण करना था, वह उस संस्कार के जैसा ही था जिसका वर्णन पहले किया गया है, यद्यपि यह ठीक वैसा नहीं था। पहले की घटनाओं के समान पापबलि (बछड़े के बजाए **बकरा**) को मिलापवाले तम्बू के सन्निकट में लाना था, जहाँ पापी पशु के सिर पर **अपना हाथ** रखता था और उसके बाद उसको मार दिया जाता था (4:24)। **याजक** बलि की गई पशु का **कुछ लहू लेकर होमबलि की वेदी के सिंगों पर लगाता था**; बचे हुए लहू को वह **होमबलि की वेदी** के पाए पर **उण्डेल देता** था (4:25)। (पिछली दो घटनाओं के समान, मिलापवाले तम्बू के भीतर लहू नहीं ले जाया जाता था।) पशु की **चरबी** को होम बलि की **वेदी पर** जलाया जाता था

(4:26)।

बलि पशु के अवशेष के बारे में कोई निर्देश नहीं दिया गया था। स्पष्ट रूप से, छावनी के बाहर इसको जलाने के बजाए, जैसे अभिषिक्त याजक और मण्डली की पापबलि में किया जाता था, यह याजकों को खाने के लिए दे दिया जाता था (6:24-30)।

साधारण लोगों के लिए पापबलिः बकरी (4:27-31)

27"यदि साधारण लोगों में से कोई अज्ञानता से पाप करे, अर्थात् कोई ऐसा काम जिसे यहोवा ने मना किया हो करके दोषी हो, और उसका वह पाप उस पर प्रगट हो जाए, 28तो वह उस पाप के कारण एक निर्दोष बकरी बलिदान के लिये ले आए; 29और वह अपना हाथ पापबलि पशु के सिर पर रखे, और होमबलि के स्थान पर पापबलि पशु का बलिदान करे। 30और याजक उसके लहू में से अपनी उंगली से कुछ लेकर होमबलि की वेदी के सींगों पर लगाए, और उसके सब लहू को उसी वेदी के पाए पर उंडेल दे। 31और वह उसकी सब चरबी को मेलबलि पशु की चरबी के समान अलग करे, तब याजक उसको वेदी पर यहोवा के निमित्त सुखदायक सुगन्ध के लिये जलाए; और इस प्रकार याजक उसके लिये प्रायश्चित्त करे, तब उसे क्षमा मिलेगी।"

जिन अंतिम लोगों को पापबलि चढ़ाने की आवश्यकता थी वे "साधारण लोग" थे।

आयतें 27, 28. यह **किसी भी साधारण व्यक्ति,** जो परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन कर पाप करता था, पर लागू होता था और इस प्रकार वह **दोषी** ठहरता था। "साधारण लोगों" का तात्पर्य "उस देश में रहने वाले लोगों" से है। यह अभिव्यक्ति उन लोगों की ओर संकेत करता है जो पूर्वोक्त वर्णित श्रेणी के अंतर्गत नहीं आते हैं - अर्थात् वे जो "अभिषिक्त याजक" या लोगों का "प्रधान पुरुष" न हो। जब उसका पाप **उस पर प्रगट किया जाता है,** तब उसको बलि करने के लिए **एक दोषरहित बकरा** लाने का निर्देश दिया गया था।

आयतें 29-31. उसको बलि चढ़ाने के लिए उन सभी प्रक्रियाओं का पालन करना था जो एक "प्रधान पुरुष" 4:22 में करता था। पापी को **अपना हाथ बकरे के सिर पर रखना था** और उसके बाद उसको **बलि** करना था (4:29)। **याजक** को उसके **लहू में से कुछ लेकर होमबलि की वेदी के सिंगों पर लगाना था**; बचे हुए लहू को उसे **वेदी के पायों पर उण्डेलना था** (4:30)। उसके पश्चात् उसको उसकी **चरबी** को वेदी पर जलाना था (4:31)। उस पशु के अवशेष के साथ क्या किया जाना चाहिए, उसके बारे में कुछ भी नहीं कहा गया है। यह अनुमान लगाया जा सकता है कि यह पापबलि का एक भाग होता था और संभवतः याजक इसे "पवित्र स्थान" में खाते थे (6:24-30; 10:17)।

इस बलि के परिणाम को स्पष्ट किया गया है। जब यह बलि **वेदी पर चढ़ाया**

जाता था तो इससे **यहोवा के निमित्त सुखदायक सुगन्ध** उठता था। दूसरे शब्दों में, इससे परमेश्वर प्रसन्न होता था! इसलिए, यह बलि उसके लिए जो बकरी लाता है, के लिए **प्रायश्चित्त** ठहरता था और उसका **पाप क्षमा किया जाता** था (4:31)।[18]

साधारण लोगों के लिए पापबलि: भेड़ी का मादा बच्चा (4:32-35)

[32]"यदि वह पापबलि के लिये एक भेड़ी का बच्चा ले आए, तो वह निर्दोष मादा हो, [33]और वह अपना हाथ पापबलि पशु के सिर पर रखे, और उसको पापबलि के लिये वहीं बलिदान करे जहाँ होमबलि पशु बलि किया जाता है। [34]तब याजक अपनी उंगली से पापबलि के लहू में से कुछ लेकर होमबलि की वेदी के सींगों पर लगाए, और उसके सब लहू को वेदी के पाए पर उंडेल दे। [35]और वह उसकी सब चरबी को मेलबलिवाले भेड़ के बच्चे की चरबी के समान अलग करे, और याजक उसे वेदी पर यहोवा के हवनों के ऊपर जलाए; और इस प्रकार याजक उसके पाप के लिये प्रायश्चित्त करे, और वह क्षमा किया जाएगा।"

जो "साधारण लोगों" की श्रेणी के अंतर्गत आते थे वे जो बलिदान करने के लिए बकरे के बजाए भेड़ी का बच्चा ला सकते थे।

आयतें 32-35. पापबलि के लिए **भेड़ी का बच्चा** बलि करने की प्रक्रिया भी वैसे ही थी जैसा बकरे को बलि के लिए निर्धारित किया गया था। यह पशु **निर्दोष मादा** होना चाहिए था (4:32)। बलि करने वाले को इसके सिर पर अपना हाथ रखना था और फिर उसको वहीं बलिदान करना था (4:33)। **याजक** को **इसके लहू में से कुछ लेकर वेदी के सिंगों पर लगाना था** और **बचे हुए लहू को उसे वेदी के पायों पर उण्डेलना था** (4:34)। तब उसको उसका **चरबी** जलाना था और उसके बचे भाग को याजक खाते थे। भेड़ी के बच्चे का यह बलिदान उस व्यक्ति के लिए **प्रायश्चित्त** था जो इसे इस आशय से लाता था कि उसका पाप **क्षमा किया जायेगा** (4:35)।

अनुप्रयोग

दो बहाने जो पाप क्षमा नहीं करता है (अध्याय 4)

जब हम वह कार्य करते हैं जिसे हमें नहीं करना चाहिए, तब, उदाहरण के लिए, हम यातायात के नियम तोड़ते हैं - तब हम आमतौर पर इनमें से एक बहाना करते हैं: "मैंने ऐसा जानबूझकर नहीं किया है" या "मैं नहीं जानता था कि मैं गलत दिशा में था।" नैतिक और धार्मिक मामलों में, जब लोगों को पता चलता है कि उन्होंने कुछ अनुचित किया है तो अक्सर इस प्रकार बहाना करते हैं: "ऐसा करने की मेरी मनसा नहीं थी" या "मुझे यह पता नहीं था कि जो मैं कर रहा हूँ वह गलत था।" क्या परमेश्वर ऐसे बहाना स्वीकार करता है?

लैव्यव्यवस्था 4:1-5:13 इस प्रश्न का उत्तर देने में हमारी सहायता करता है।

"अनजाने में किया गया पाप" वे पाप हैं जो अज्ञानता में किए जाते हैं ("मुझे पता नहीं था कि जो मैं कर रहा हूँ वह गलत था") या फिर जो असावधानी से किए जाते हैं ("मेरा ऐसा करने की मनसा नहीं थी")। (देखें 4:13, 23, 28.) जो व्यवस्था के अधीन जी रहा है उस पर जब ऐसा पाप प्रगट किया जाता है तो यहोवा कहता है कि उसको उसके लिए बलिदान चढ़ाने की आवश्यकता थी।

अवज्ञापूर्ण पापों से भिन्न, असावधानी से किए गए पाप के बारे में एक अच्छी बात यह थी कि उनके लिए पापबलि किया जा सकता था। यदि अपेक्षित भेंट चढ़ाई जाती थी तो पाप क्षमा किया जाता था। फिर भी, बुरी बात यह है कि इसके बावजूद वे अभी भी पाप ही थे और उसे क्षमा प्राप्ति की आवश्यकता थी! एक इस्राएली इस प्रकार शिकायत कर सकता था, "हे प्रभु, मैंने जानबूझकर गलत कार्य नहीं किया; मैं तो ऐसा करते समय यह भी नहीं जानता था कि जो मैंने किया वह गलत था। तो मुझे क्यों दण्डित किया जा रहा है? फिर मुझे पाप क्षमा के लिए बलिदान चढ़ाने की क्यों आवश्यकता है?" यहोवा ऐसे वादविवाद से प्रभावित नहीं होगा। मनुष्यों के लिए उसका संदेश यह था "तुमने जानबूझकर पाप नहीं किया, या पाप करते समय तुम इसके बारे में अनभिज्ञ थे। फिर भी, तुमने पाप किया है। अब तुमको अपने पापों की प्रायश्चित्त हेतु बलिदान चढ़ाना होगा।"

आज, हमको ठीक ऐसे ही परमेश्वर से हमारे पाप देखने की अपेक्षा करनी चाहिए। यदि हमने जानबूझकर पाप न किया हो और यदि पाप करते समय हमको इसके बारे में पता भी न हो, और जब हम परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन करते हैं तो हम पाप करते हैं! तब, जिस प्रकार एक इस्राएली को पापबलि चढ़ानी पड़ती थी, उसी तरह हमको भी पश्चाताप करना चाहिए और हमको हमारी पापबलि - "यीशु मसीह" की ओर फिरना चाहिए - ताकि हमें हमारे पापों से हमको क्षमा मिले। चाहे वह पाप अज्ञानतावश या फिर असावधानीपूर्वक किया गया हो, वही क्षमादान का एक मात्र मार्ग है (1 यूहन्ना 1:6-2:2)।

पापबलिः "हे प्रभु, मैं सचमुच शर्मिंदा हूँ" (4:1-5:13)

याजकों और आराधकों के लिए सबसे महत्वपूर्ण बलिदान - पापबलि, के लिए अभी तक जो कुछ कहा गया है, उसका मुख्य निर्देश लैव्यव्यवस्था में पाया जाता है। यह बलिदान इस संदर्भ में इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि यह बलिदान सभी इस्राएलियों, यहाँ तक कि याजकों के लिए भी आवश्यक था।

इस बलिदान की विशिष्टता। पापबलि और अन्य बलिदानों में क्या भिन्नताएं थी?

सर्वप्रथम, यह बलिदान दोषरहित था। हर एक बलिदान के साथ, परमेश्वर बलि चढ़ाए जाने वाले पशु के गुणवत्ता की चिन्ता करता था। परमेश्वर का गुण और प्रकृति इस बात की मांग करता है कि उसका इस्राएलियों के बीच आर्थिक विषमता की अनुमति देने के बावजूद, उसको सर्वोत्तम दिया जाना चाहिए। जबकि, पापबलि में, निर्दोष बलिदान को बड़ा महत्व दिया गया है। मुख्यतः होमबलि, अन्नबलि, और मेलबलि स्वीकार किए जाने के लिए था। इसके द्वारा विश्वासयोग्य

इस्राएली, यहोवा के साथ अपनी संगति के प्रति संतुष्टि व्यक्त करता था। उसका बलिदान यहोवा को सुगंधित, संतोषजनक, और संतुष्टि के रूप में प्रस्तुत था। लेकिन पापबलि और दोषबलि में आराधक पाप के अधीन खड़ा होता है।[19] यह बलिदान आराधना में निरंतरता बनाए रखने के लिए नहीं था; यह तो पाप द्वारा विकृत संबंध का सुधार करने के लिए था। यह जितना संभव हो पवित्र परमेश्वर के सम्मुख सिद्ध होना चाहिए था जो अपने पूर्वज्ञान से यह जानता था कि यह उसके सिद्ध पुत्र के तुल्य ठहरेगा जो कालांतर में इस संसार के पाप के बदले अपने प्राण का त्याग करेगा।

दूसरी बात, बलिदान छावनी के बाहर जलाया जाता था। बाकी बलिदान निवास स्थान में पवित्र स्थान के सामने वेदी पर चढ़ाए जाते थे। अन्य सभी बलिदानों के समान, जबकि इस बलिदान से भी चरबी हटाई जाती थी, होमबलि के समान ही सम्पूर्ण बछड़े को छावनी से बाहर ले जाया जाता था और अलग आग में जलाया जाता था। इस बलिदान के अनुप्रयोग का आशय इब्रानियों 13:11, 12 में मसीह के बलिदान के रूप में पाया जाता है।

> क्योंकि जिन पशुओं का लहू महायाजक पापबलि के लिये पवित्रस्थान में ले जाता है, उनकी देह छावनी के बाहर जलाई जाती है। इसी कारण, यीशु ने भी लोगों को अपने ही लहू के द्वारा पवित्र करने के लिये फाटक के बाहर दु:ख उठाया।

यीशु ने यरूशलेम के चाहरदीवारी के बाहर गोलगाता में पापबलि के प्रतिरूप को पूरा किया।

तीसरी बात, इस बलिदान की यह अर्हता थी कि इसके लहू को कई स्थानों में छिड़का जाना था। सुखदायक सुगन्धित बलिदानों में, जिसमें पशु बलि किया जाना अनिवार्य था, याजक और आराधकों की अन्य गतिविधियों में लहू गौण होता था। पापबलि में, लहू, न केवल होमबलि की वेदी के चारों ओर कुछ विशेष स्थानों में छिड़का जाता था, बल्कि यह वेदी के सिंहों, जो सबसे प्रत्यक्ष और पवित्र भाग था, पर भी लगाया जाता था। पूरी मण्डली की पाप के बलिदान के संदर्भ में, न केवल लहू उन विशिष्ट स्थानों में छिड़का जाता है बल्कि याजक लहू को पवित्र स्थान में ले जाता था और उसे वह महा पवित्र स्थान के परदे के सामने वाली धूप जलाने की वेदी के सिंगों पर लगाता था। प्रायश्चित्त के दिन पापबलि में महायाजक महा पवित्र स्थान में अपने लिए और फिर लोगों के पाप के लिए लहू लेकर जाता था। यह लहू प्रायश्चित्त के ढकने पर उण्डेला जाता था। इसका प्रतीक स्पष्ट थाः जब लोगों के शुद्ध करने की बारी आती थी, तब लहू और परमेश्वर लाया जाना चाहिए था। संभवतः यह परमेश्वर का पाप के प्रति दृष्टिकोण प्रदर्शित करता हैः जब इसकी चरम सीमा राष्ट्र के पाप तक पहुँच जाती थी, तो राष्ट्र को पाप क्षमा के लिए परमेश्वर के और निकट जाने की आवश्यकता थी।[20]

चौथी बात, जब पापी से संबंधित बात आती थी तो कोई अपवाद नहीं छोड़ा गया था। लैव्यव्यवस्था 4 का विश्लेषण विस्तृत है, लेकिन इसका विशेष कारण है। चाहे यह भविष्यवक्ता, याजक, या राजा का मामला हो, परमेश्वर ने सबके लिए

उपाय किया है; लेकिन उसने किसी को भी पापबलि में किसी प्रकार की छूट नहीं प्रदान की है। साधारण इस्राएलियों की तुलना में याजक के लिए विशिष्ट व्यवस्था थी क्योंकि परमेश्वर की सेवा में उसका विशेष स्थान था। फिर भी, उसको भी, अन्य लोगों के समान, जो पाप उसने किया है उसके प्रति पश्चाताप करना था। परमेश्वर इस्राएल को एक याजकीय राष्ट्र घोषित करता है और पवित्र स्थान में याजक इस राष्ट्र का प्रतिनिधित्व करता है। जब याजक पाप करता था तो उससे पवित्र स्थान अपवित्र होता था जिसमें वह परमेश्वर के सम्मुख इस्राएल का प्रतिनिधित्व करता है। तो जो राष्ट्र को करना होता था, याजक को भी वही करना होता था। पहले याजक को प्रायश्चित्त करना था; तभी वह उचित तरीके से परमेश्वर के सम्मुख लोगों का प्रतिनिधित्व कर सकता था और लोगों के लिए मध्यस्थता कर सकता था। लोगों के प्राचीन या न्यायियों जैसे अगुवे व्यवस्था से ऊपर नहीं थे (4:22)।

पापबलि और उद्धारकर्ता। हमने पहले ही मसीह का पापबलि में रूप और प्रतिरूप अध्ययन कर लिया है। फिर भी, हमें इसकी प्रशंसा करने के लिए नये नियम के कुछ सिद्धांत इसमें लागू करने होंगे।

सबसे पहले, मसीह ने सम्पूर्ण और उत्कृष्ट बलिदान दिया (इब्रा. 9:11-14)। पापबलि पुनरावृत्तीय बलिदान था। यह इस आशय से अस्थायी शुद्धिकरण प्रदान करता था कि आरंभिक पापबलि देने के पश्चात् संक्षिप्त समय के लिए पाप का दण्ड टल जाता था, लेकिन जैसे ही आराधक देह या फिर आत्मा में अशुद्ध हो जाता था तो उसको दोबारा बलिदान चढ़ाना पड़ता था। आराधक का विवेक, उसके स्वयं के पापों के कारण और परमेश्वर की दृष्टि में चढ़ाए गए बलिदान की अपर्याप्ता के कारण सदाकाल के लिए शुद्ध नहीं हो सकता था। मसीह का बलिदान, एक सिद्ध (दोषरहित) बलिदान था, जिसने सदाकाल के लिए एक ही बार में, मनुष्यों के शुद्धिकरण के लिए आवश्यक शुद्धिकरण का उपाय करके स्वर्ग की महा पवित्र स्थान, परमेश्वर की उपस्थिति में प्रवेश किया। जैसे एक लेखक ने लिखा कि इस "बलिदान करने वाले का चरित्र या स्थिति नहीं बल्कि बलिदान का परिमाण है"[21] जो इसका महत्व दर्शाती है। प्रश्न यह नहीं है कि क्या एक नये नियम का विश्वासी पुराने नियम के यहूदी से उत्तम है बल्कि यह कि क्या मसीह का लहू, बछड़ों और बकरियों के लहू से बेहतर है। यह हमें हमारी मानवता का दृष्टिकोण समझने में सहायता करता है। हम सब पाप के अधीन हैं (रोमियों 3:23); हम किसी से बेहतर नहीं हैं। आमतौर पर देखा जाए तो मानव जाति की दो ही श्रेणी हैः उद्धार पाए हुए पापी और खोए हुए पापी।[22] हम नये नियम के अधीन की प्रशंसा कर सकते हैं लेकिन क्रूस की दोनों दिशाओं की ओर परमेश्वर के कार्य की भी प्रशंसा की जानी चाहिए, क्योंकि उसने इस तरह से पाप से छुटने का उपाय किया था।

दूसरा सिद्धांत यह है कि हमें पाप के प्रति वैसे ही दृष्टिकोण रखना है जैसे परमेश्वर का पाप के प्रति दृष्टिकोण है। इस युग के बदलते शब्दावली में हमने पाप को परमेश्वर की तुलना में हल्के शब्दों में आंकना प्रारंभ कर दिया है। हमारी प्रार्थनाओं में बहुधा "कमी" और "गलती" जैसे शब्द सुनाई पड़ते हैं। इन शब्दों ने

हमारी ऊपर "पाप" की गम्भीरता को जितना होना चाहिए था उससे हल्का कर दिया है। हमें यह ध्यान रखना होगा कि पाप का उपाय कर दिया गया है परंतु स्मरण रखें कि परमेश्वर पाप को प्राणघातक समझता है।

परमेश्वर के लिए यह क्यों आवश्यक हो गया था कि वह पशु बलियों का अंत कर अपने पुत्र यीशु मसीह का लहू उनके स्थान पर लाए? आइए हम न केवल इस्राएलियों के पापों पर ध्यान करें, बल्कि उनके पापों पर भी विचार करें जो उसके वाचा के बाहर हैं (इफि. 2:10, 11) जिन्हें छुटकारे की आवश्यकता थी। केवल यीशु के इस महान बलिदान के द्वारा ही जगत के पापों का उचित प्रायश्चित्त किया जा सकता है। छूट और समर्पण के कार्य के द्वारा ही पाप के लिए वास्तविक दोष का अध्यारोपण किया जा सकता था। इसलिए, पाप के मामले को पापी और परमेश्वर के बीच सुलझा लिया जाना चाहिए था। यह ईश्वरीय सिद्धांत कई मनोवैज्ञानिक पद्धति, जो हमारे समाज और संभवतः कलीसिया में भी घुस आया है, के बीच घोर विरोधाभास प्रस्तुत करता है। दोष इसके खुल्लम खुल्ला व्यवहार के कारण सत्य है। इसका उत्तर "कान खुजाने" वाला संदेश नहीं है। खरी शिक्षा परमेश्वर के सम्मुख व्यक्तिगत् ज़िम्मेदारी होनी चाहिए। इससे पहले कि पाप का उत्तर लोगों के सम्मुख प्रस्तुत किया जाए, उनको उनके जीवन में पाप के प्रति दोषी ठहराया जाना चाहिए।

उपसंहार। मानवतावाद, नास्तिकवाद और अनैतिकवाद के इस युग में, केवल यीशु ही हमारी समस्याओं का उत्तर है। कलीसिया को उद्धार का संदेश देने का मत प्राप्त है। हमें ऐसे अवसर प्रदान करना है जो लोगों की आवश्यकता की पूर्ति कर सके और उन्हें मसीह की ओर दिशा निर्देशित कर सके। लोग अपनी समस्याओं के उत्तर की खोज में हैं। अंत में कई ऐसे लोग होंगे जो धर्म और कलीसिया की ओर दृष्टि करेंगे। क्या तब हम उन्हें अनंत जीवन की ओर अग्रसर होने के लिए उत्तर दे पाएंगे?

मैक्स तार्बेट

समाप्ति नोट्स

[1]सबसे बड़े संस्करण "पापबलि" के अनुवाद पर (KJV; ASV; NKJV; NIV; NRSV; NAB; NJPSV; ESV) पर सहमत हैं। एनजेबी इसे "पाप के लिये बलिदान कहता है। इब्रानी शब्द *चट्टाअथ* का अर्थ है 'पापबलि' (135 बार) ... । यह कुछ विशेष 'पाप,' भूल से विश्वासघात करे और पापी ठहरे, किसी काम को भूल से करके पापी हो जाए और सम्भवतः उस समय न जानते हुए करके पापी हो जाए (लैव्य. 4:2; 5:15) के लिये एक बलिदान था।" (डब्ल्यू. इ. व्हाइन, मेरिल एफ. अनगर, एण्ड विलियम व्हाइट, जूनियर, *व्हाइन्'स कम्पलीट एक्सपोजिटरी डिक्शनरी ऑफ़ ओल्ड एण्ड न्यू टेस्टामेंट वर्ड्स* [नैशविले: थॉमस नेल्सन पब्लिशर्स, 1985], 232)। *चट्टाअथ* शब्द का अर्थ भी केवल "पाप" ही हो सकता है। [2]आरईबी में "शुद्धिकरण-बलि" है (देखें CEB)। [3]रॉय गेन, *लैव्यव्यवस्था-गिनती,* दि एनआईवी एप्लीकेशन कॉमेंटरी (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जॉन्डर्वन, 2004), 96-97. [4]जॉन एच. हेस, "लैव्यव्यवस्था," इन *हार्पर्स बाइबल कॉमेंटरी*, एड. जेम्स एल. मेयज (सैन फ्रांसिस्को: हार्पर एण्ड रो, 1988), 160. [5]अध्याय 3 में टिप्पणियों में सुझाव दिया गया है, "मेलबलि" का

प्रमुख उद्देश्य शायद क्षमा प्राप्त करना नहीं था, परन्तु बलिदान से जुड़े कार्यों से पता चलता है कि क्षमा बलिदान का प्रत्याशित परिणाम था। [6]जैसा कि अध्याय 1 में टिप्पणियों में उल्लेख किया गया है, होमबलि पर वर्णन यहोवा के लिये बलि चढ़ाने वाले का कुल समर्पण पर हो सकता है। फिर भी, लेख कहता है कि इसका परिणाम प्रायश्चित पर टिका हुआ था। [7]क्लाइड एम. वुड्स, *लैव्यव्यवस्था - गिनती - व्यवस्थाविवरण*, द लिविंग वे कॉमेंटरी ऑन दि ओल्ड टेस्टामेंट, वॉल्यूम 2 (श्रेवेपोर्ट, ला.: लैम्बर्ट बुक हाउस, 1974), 9. [8]गेन, 98. [9]व्हाइन, अनगर, एण्ड व्हाइट, 232. [10]आर. लैआर्ड हैरिस, "लैव्यव्यवस्था," इन *दि एक्सपोजिटर्स बाइबल कॉमेंटरी*, वॉल्यूम 2, *उत्पत्ति - गिनती*, एड. फ्रैंक ई. गेबेलेन (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जॉन्डर्वन पब्लिशिंग हाउस, 1990), 547, 48.

[11]शायद इस तथ्य पर आधारित है कि मूसा की व्यवस्था ने भूल से किए गए पापों के लिये कोई बलिदान नहीं ठहराया, इब्रानियों के लेखक ने कहा कि मसीही जो इसी तरह पाप करते हैं वे अपनी आत्मा को खोने और "जीवित परमेश्वर के हाथों" से गिरने के खतरे में हैं (इब्रा. 10:26-31)। परमेश्वर किसी को भी क्षमा करता है जो पश्चाताप करता है। परन्तु, उस मनुष्य के लिये कोई बलिदान नहीं है जो जानबूझकर पाप में पड़ा रहता है। "अनजाने में" और "निराशाजनक" पापों की चर्चा कोय डी. रोपर, *गिनती*, ट्रुथ फ़ॉर टुडे कमेन्ट्री (सर्ची, आर्क.: रिसोर्स पब्लिकेशन्स, 2012), 218-23 में मिलता है। इसके अलावा, यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि पापबलि को प्रमुख अपराधों के लिये उतना प्रभावी नहीं था - अर्थात् उन पापों के लिये (जैसे व्यभिचार और हत्या), जो मृत्यु दण्ड के पात्र थे। [12]लुडविग कोहलर एण्ड वाल्टर बाउमगार्टनर, *द हिब्रू एण्ड अरामाईक लेक्सिकॉन ऑफ़ ओल्ड टेस्टामेंट*, स्टडी एड., ट्रांस. एण्ड एड. एम. ई. जे. रिचर्डसन (बोस्टन: ब्रिल, 2001), 1:305. [13]दोनों बलियों के बीच एक स्पष्ट भिन्न प्रक्रिया यह है कि होमबलि एक आम व्यक्ति चढ़ाता है और इसलिए वह स्वयं लहू या बलि के अंश को वेदी पर नहीं चढ़ा सकता था। लेकिन "अभिषिक्त याजक" के पाप की स्थिति में, बलि चढ़ाने वाला (पापी) और याजक, दोनों की भूमिका वह स्वयं निभाता है। याजक होने के नाते, परमेश्वर ने उसको वेदी पर लहू छिड़कने और जानवर को वेदी पर रखने का अधिकार दिया था। [14]ऐलेन पी. रौस ने लिखा, "इस पशु के साथ अपनी पहचान के द्वारा [पशु के सिर पर अपना हाथ रखने के कारण] दोषी यह स्वीकार करता है कि उसके लिए एक पशु को अपनी जान गंवानी पड़ी। उनके हाथों एक पशु की मृत्यु उन्हें यह प्राथमिक सच्चाई स्मरण दिलाता है कि पाप की मज़दूरी मृत्यु है। उनके स्थान पर एक पशु की मृत्यु उन्हें यह अवगत् कराता है कि परमेश्वर के अनुग्रह से ही वे जीवित रह सकते हैं" (ऐलेन पी. रौस, *हॉलीनेस टू द लॉर्ड: ए गाईड टू दि एक्सपोज़िशन ऑफ़ द बुक ऑफ़ लैव्यव्यवस्था* [ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर एकेडेमिक, 2002], 131)। [15]इसके प्रति दूसरा दृष्टिकोण यह है कि "यह जलाना ... कोई परंपरागत कार्य नहीं बल्कि पशु के अवशेष का उचित निस्तारण है क्योंकि यह अति पवित्र है और इसे अपवित्र नहीं किया जा सकता है। यह परंपरा इस ओर संकेत करता है कि छावनी के बाहर पवित्र वस्तुओं, बलि से चरबी मिला हुआ राख को निस्तारण करने का एक स्थान है (देखें 1:16)" (जॉन ई. हार्टले, *लैव्यव्यवस्था*, वर्ड बिब्लिकल कमेंट्री, खण्ड 4 [डालसः वर्ड बुक्स, 1992], 61). इसके साथ ही, टीकाकार इस बात की ओर संकेत करते हैं कि पशु के अवशेष का छावनी के बाहर जलाया जाना यीशु का दुःख उठाना और उसकी मृत्यु का पूर्वाभास है "फाटक के बाहर...छावनी के बाहर" (इब्रा. 13:10-13)। [16]आइज़क अब्रावानेल (मध्यकालीन यहूदी विद्वान) का अनुसरण करते हुए जेकब मिलग्रोम ने यह सुझाव प्रस्तुत किया कि महायाजक और मण्डली के पाप के लिए बलि "एक ही थी।" महायाजक ने परमेश्वर की व्यवस्था का उल्लंघन कर पाप किया लेकिन उसने मण्डली को पाप करने के लिए उकसाया। तब महायाजक और मण्डली के लिए पश्चाताप किया जाना चाहिए था। (जेकब मिलग्रोम, *लैव्यव्यवस्था 1-16*, दि एंकर बाइबल [न्यू यॉर्कः डबलडे, 1991], 241.) मिलग्रोम के इस विचारधारा पर क्लायड एम. वुड्स और जस्टिन एम. रोजर्स ने इस प्रकार प्रतिक्रिया व्यक्त किया, "यह इस बात का विश्लेषण करता है कि कैसे सारी इस्राएल की मण्डली एक साथ कैसे पाप कर सकती है। इसके साथ ही, यह इस बात का भी विश्लेषण करता है कि मण्डली का पाप अन्य लोगों के आँखों से कैसे छिप सकता है (क्लायड एम. वुड्स एण्ड जस्टिन एम. रोजर्स, *लैव्यव्यवस्था - गिनती*, द कॉलेज प्रेस NIV कमेंट्री [जॉप्लीन,

मिसूरी: कॉलेज प्रेस पब्लिशिंग कम्पनी, 2006], 55, एन. 63)। [17]"प्रधान पुरूष के लिए पापबलि का प्रावधान बकरा था, जो बछड़ा से सस्ता होता था (आयतें 3, 14) लेकिन उसका मूल्य बकरी या भेड़ से अधिक होता था (पद 28, 32)" (वुड्स एण्ड रोजर्स, 56)। [18]इसके बजाए कि "तब उसको क्षमा मिलेगी" (4:31) इस वाक्यांश का अनुवाद "ताकि वह क्षमा किया जायेगा" किया जा सकता है (देखें CEV)। [19]एन्ड्रू ज्यूक्स, *द लॉ ऑफ़ द ऑफ़रिंग्स* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: क्रेगेल पब्लिकेशन्स, एनडी), 142. [20]एस. एच. केलॉग, द बुक ऑफ़ लैव्यव्यवस्था, तीसरा संस्करण (एनपी: ए. सी. आर्मस्ट्रांग एण्ड सन, 1899; पुनर्मुद्रित, मिनियापॉलिसः क्लॉक एण्ड क्लॉक क्रिश्चयन पब्लिशर्स, 1978), 137-38.

[21]सी. एच. मेर्किटोस, *उत्पत्ति टू व्यवस्थाविवरण नोट्स आन द पेन्टाट्यूक* (नेप्च्यून, न्यू जर्सी: लुईसॉक्स ब्रदर्स, 1972), 324. [22]इन श्रेणियों से वे अलग रखे गए हैं जो लेखा देने की अवस्था तक नहीं पहुँचे हैं, इनमें वे सम्मिलित हैं जो या तो बहुत छोटे हैं या फिर जिनका मांसिक विकास नहीं हुआ है।